10.

11/04/2020
B.A. H.

"सखि हे कि पुछसि अनुभव मोए'
— महाकवि विद्यापति

⇒ "सखि हे कि पुछसि अनुभव मोए।'

शब्दार्थ :- पुछसि - पुछैत छी, मोए - हमर।

अर्थ :- राधा अपन सखीसभक बीच प्रेमकेर परिभाषा आ ओकर प्रभावकें बुझबैत कहैत छथि -
हे सखी लोकनि, हमरासँ हमर प्रेमक अनुभवकेर प्रसंग की पुछैत छी।

⇒ "सेहे पिरीति अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होए।।1।।"

शब्दार्थ :- सेहे - सएह/ओही, पिरीति - प्रीति, अनुराग - अन्तर्निहित प्रेम, बखानिअ - बखान करब, तिल-तिल - क्षण-क्षण, नूतन - नव।

अर्थ :- ओही प्रीति/प्रेम कें अन्तर्निहित प्रेम/अनुराग कहल जाइछ जे क्षण-क्षणमे नव होइत रहए।

⇒ "जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।
सेहे मधुर बोल श्रवनहि सूनल, श्रुति पथ परस न भेल।।2।।"

शब्दार्थ :- जनम अवधि - जन्मभरि, नयन - आँखि, तिरपित - तृप्त
श्रुति पथ - कान, परस - स्पर्श, न - नहि।

Scanned by TapScanner

अर्थ :- हम जीवन भरि रूप-सौन्दर्यकेँ (कृष्णकेर) निहारैत रहलहुँ मुदा तैओ आँखि तृप्त नहि भए सकल। हुनक मधुर बोल बराबरि सुनैत रहलहुँ मुदा लगैछ जेना हमर कानमे तकर स्पर्श धरि नहि भए सकल।

> "कत मधु-जामिनि रभस गमाओल, न बुझल कैसन केलि।
> लाख-लाख जुग हिअ-हिअ राखल, तइओ हिअ जरनि न गेलि ॥३॥"

शब्दार्थ :- कत – कतेको, मधु (मास) – वसन्त, जामिनि – यामिनी/राति, रभस – केलि-क्रिया, कैसन – कैहन, केलि – संयोगावस्था, जुग – युग, हिअ – हृदय, जरनि – हृदयक ज्वाला अर्थात् कामवेग।

अर्थ :- वसन्तक कतोक राति केलि-क्रियामे बितौलहुँ, तैओ ई नहि बुझि सकलहुँ जे केलि कैहन होइत छैक। लाखक लाख युगधरि हृदयसँ हृदय सटओने रहलहुँ, तैओ हृदयक ज्वाला अर्थात् कामवेग शान्त नहि भए सकल।

> "कत बिदगध जन रस अबगाहल, अनुभवि काहु न पेख।
> विद्यापति कह प्रान जुड़ाइते, लाखे न मिलल एक ॥५॥"

शब्दार्थ :- बिदगध – विदग्ध (रसिक), अबगाहल – स्वीकार कयलक, पेख – देखब/कए सकब, प्रान – प्राण।

अर्थ :- कतेको रसिकजन एहि रसकेँ स्वीकार कयलनि, मुदा केओ तकर अनुभव नहि कए सकलाह। विद्यापति कहैत छथि जे लाखमे एको गोटए नहि भेटलाह, जनिक प्राण जुरायल होनि, तृप्त भेल होनि।

By :- DR. AJIT MISHRA
MLS College, Sarisab Pahi